



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (II)
PART II—Section 3—Sub-Section (II)

प्रोप्रकाश द्वारा प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY



म. 545] नई दिल्ली, बुधवार, सितम्बर 15, 1993/ भाद्र 24, 1915

No. 545] NEW DELHI, WEDNESDAY, SEPTEMBER 15, 1993/BHADRA 24, 1915

विश मंसाक्षय
(राजस्व विभाग)
केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड
अधिकृतना
नई दिल्ली 15 सितम्बर, 1993
ब्याज-कर

का.प्रा. 035(अ) — केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, ब्याज कर अधिनियम, 1974 (1974 का 45) की धारा 27 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, ब्याज-कर नियम, 1974 का और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाता है अर्थात् :—

1. (1) इन नियमों का संधिका नाम ब्याज-कर (मंशोधन) नियम, 1993 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख की प्रकृत होगी।

2. ब्याज-कर नियम, 1974 के परिवर्तन में—

(क) विद्यमान प्रलेप सं. 1 के स्थान पर निम्नलिखित प्रलेप रखा जाएगा, अर्थात् :—

प्रलेप सं. 1

ब्याज-कर

प्रभार्य ब्याज की विवरणी

ब्याज-कर अधिनियम, 1974
की धारा 7 और ब्याज-कर
नियम, 1974 का नियम 3
देखिए

प्रायकर कार्यालय में प्रयोग के
लिए

नाम वीर कार्यालय का पता
स्पष्ट शब्दरूपों में

स्थायी लेखा संक्षाक

टेलीफोन

बाई/सहित/विशेष रेज जहा
निर्धारण किया गया/निर्वाचनीय

निर्धारण वर्ष

क्या यह पुनरीक्षित विवरणी है। यदि है, तो पूर्व विवरणी की रसीद में और तारीख कथित करें।

कथन करे कि निवासी हैं या अनिवासी

भाग-1 प्रभार्य व्याज का विवरण :

1. भारत में दिए गए उधारों और अप्रिमों पर व्याज [टिप्पण के क्रम सं. 7 (i) और (ii) ऐक्षिण]
2. कम करें: व्याज जो इक्कत्तन शृण मार्कित हो गया है [टिप्पण के क्रम सं. 7 (iii) ऐक्षिण]
3. प्रभार्य व्याज (1-2)
4. प्रभार्य व्याज जो दम राप के निकटतम गुणज तक पूर्णांकित किया गया है (आयकर अधिनियम की धारा 288 के जैसी यह व्याज-कर अधिनियम की धारा 21 को लागू है)

भाग-2 व्याज कर का विवरण :

1. प्रभार्य व्याज पर कर
2. जोड़िए-
 - (क) विवरणी को विलम्ब से फाल्ट करने के लिए व्याज (धारा 12)
 - (ख) अग्रिम कर के संवाद में व्याज अम के लिए व्याज (धारा 12क)
 - (ग) अग्रिम कर संदाय के आस्थागत के लिए व्याज (धारा 12घ)
3. संवेद छुल कर और व्याज (1+2) रु.
4. मंदस्त प्राप्ति कर :

रकम (रु.) पहली फिरत दूसरी फिरत तीसरी फिरत योग तारीख

5. स्वतः निर्धारण पर कर संवाद की तारीख व्याज कर (रु.) उपरोक्त क्रम में 2 योग (रु.) से व्याज
6. मंदस्त कुल कर और व्याज (4-5) से व्याज रु.
7. संदेय या प्रतिदेय कर/व्याज (3-6) रु.

भाग 3—अन्य राजियों जो प्रभार्य व्याज में ममिलित नहीं की गई हैं और जिनके करारेय न होने का बाबा किया गया है।

विशिष्टिया	रकम (रु.)	किस कारण से वे करगेहेय नहीं हैं
सत्यापन		
मैं—		जो (पूरा नाम स्पष्ट अक्षरों में)
जो—		का पुत्र/पुत्री/पत्नी हूँ
जो—		(प्रत्यक्ष संस्था का नाम) की हूँ (पदाधिकारी)

मत्यनिष्ठा से घोषणा करता/करती हूँ कि मेरे सर्वोन्म ज्ञान और विश्वास गे इस विवरणी और इसके साथ लगाए गए विवरण में दी गई सूचना सही और पूर्ण है और यह कि प्रभार्य व्याज की रकम तथा उसमें दर्शित अन्य विशिष्टियां सही तौर कथित की गई हैं और 1 अप्रैल, 19 को प्रारम्भ होने वाले निर्धारण वर्ष से गुमांग पूर्व से बंदछित हैं।

मैं प्राप्ते मत्यनिष्ठा से घोषणा करता/करती हूँ कि उक्त पूर्व वर्ष के दोगत कोई अन्य प्रभार्य व्याज प्रत्येक संस्था को म तो प्रोत्थम या उद्धृत दृश्य था न ही उसने प्राप्त किया था।

मैं प्राप्ते घोषणा करता/करती हूँ कि— के रूप में अपनी हैमियत से मैं यह विवरणी बनाने के लिए और प्रत्यय मंस्था की ओर से इसका सत्यापन करने के लिए सक्षम हूँ।

तारीख—

स्थान—

हस्ताक्षर—

टिप्पण :—

1. इस विवरणी पर प्रत्यय मंस्था के प्रधान अधिकारी द्वारा और जहाँ किसी अनिवार्य प्रत्यय मंस्था की वाला में किसी अकित को आयकर अधिनियम 1961 की धारा 163 के अधान उसका अधिकारी माना जाता है यहाँ ऐसे अकित द्वारा हस्ताक्षर किए जाने चाहिए।

2. सत्यापन पर हस्ताक्षर कर के पूर्व हस्ताक्षरकर्ता को अपना यह समाधान कर लेना चाहिए कि यह विवरणी और उसके साथ के विवरण मही और सभी प्रकार मे पूर्ण है। इस विवरण लब्धता उसके साथ के विवरणों में मिथ कथन करने वाले कोई व्यक्तिवाच कर अधिनियम 1974 की धारा 24 के अधीन अभियोजन को दायी होगा और दोषप्रिद्धि पर कठोर कारावास से जिसकी अवधि तीन मास से कम की नहीं होगी तो जो सात वर्ष तक की हो सकेगी। और जुर्माने से, दंडनाय होगा।

3. अनुपयुक्त शब्दों को काट दीजिए।

4. यदि इम विवरणी के आधार पर संदेय व्याज कर अग्रिम रूप से मंदस्त व्याज कर कम रकम मे अविक क है तो ऐसा अधिक व्याज कर और उसके साथ इस अधिनियम के किसी उपबंध के अधीन संदेय व्याज इस विवरणी को देने के पूर्व संक्षेप किया जाना चाहिए और विवरण के मात्र ऐसे व्याज कर और कर के संदाय का स्वृत होना चाहिए (धारा 9) (1).

5. मंपरीक्षित लेखाओं की एक प्रति लेखा परीक्षक की रिपोर्ट के प्रति के साथ संलग्न करे।

6. “प्रत्यय संस्था” मे अभिप्रेत है:—

(i) कोई बैंककारी कंपनी जिसे बैंककारी विनियम अधिनियम, 1949 (1949 का 19) लागू होता है (जिसके अंतर्गत उस अधिनियम की धारा 51 में निर्दिष्ट कोई बैंक या बैंककारी मंस्था है);

(ii) कंपनी अधिनियम 1956 (1956 का 1) की धारा 4क में परिवर्तित कोई लोक वित्तीय मंस्थान,

(iii) राज्य वित्तीय नियम अधिनियम 1951 (1951 का 63) की धारा 3 या धारा 3क के अधान स्थापित कोई राज्य वित्तीय नियम या धारा 46 के अधीन अधिवृद्धित कोई संस्था, और

(iv) कोई अन्य वित्तीय कंपनी।

“वित्तीय कंपनी” से अभिप्रेत है खंड (5क) के उपखंड (i) (ii) या उपखंड (iii) में निर्दिष्ट कंपनी से भिन्न कोई जो—

(i) अबक य वित्त कंपनी है अर्थात् ऐसी कंपनी है जो अपने मुख्य कारबाह के रूप में अवक्य संव्यवहार या ऐसे संव्यवहार का वित्त घोषण करती है,

(ii) विनिधान कंपनी है अर्थात् ऐसी कंपनी है जो अपने मुख्य कारबाह के रूप में शेयर, स्टॉप, बैंकवल, डिबेचर, डिबेचर स्टॉक अथवा सरकार या राजनीति प्राधिकारी द्वारा निर्मित प्रतिभूतियों अथवा इसी प्रकार की अन्य विषय प्रतिभूतियों का अर्जन करती है।

(iii) आवास वित्त कंपनी है अर्थात् ऐसी कंपनी है जो अपने मुख्य कारबाह के रूप में मकानों के अर्जन या सन्तुर्माण के जिसके अन्तर्गत उसके संबंध में भूमि का अर्जन या विकास है वित्त घोषण का कारबाह कर करती है।

(iv) उधारदाता कंपनी है, अर्थात् ऐसी कंपनी है (जो उपखंड (i) से उपखंड (iii) में निर्दिष्ट कंपनी नहीं है और जो अपने मुख्य कारबाह के रूप में उधार या अग्रिम वेकर या अन्यथा वित्त उपलब्ध करने का कारबाह करती है।

(v) पारस्परिक फायदा वित्त कंपनी है, अर्थात् ऐसी कंपनी है जो अपने मुख्य कारबाह के रूप में अपने सदस्यों से निक्षेपों का प्रतिग्रहण करने का कारबाह करती है और जो केन्द्रीय सरकार द्वारा कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 620क के अधीन निधि या पारस्परिक फायदा सोसायटी घोषित की गई है;

(vi) अविष्ट कैरेंडरकरारी कंपनी है (जो उपखंड (i), (ii), (iii), (iv) या (v) में निर्दिष्ट वित्तीय कंपनी से भिन्न है) अर्थात् ऐसी कंपनी है जो किसी स्कीम या ठहरव के अधीन, आहे वह किसी भी नाम से शात हो, अभियांत्रों या अभियानों के रूप में अथवा यूनिटों या प्रमाणाङ्कों भया अन्य निष्ठाओं के विक्रय द्वारा या किसी अन्य रीत से एक मृश्त राशि में या किसी भी निष्पेक प्राप्त करती है या

(vii) प्रकीर्ण वित्त कंपनी है अर्थात् ऐसी कंपनी है जो अनन्यतः या लगभग अनन्यतः पूर्ववर्ती उपबन्धों में निर्दिष्ट या या अधिक वर्गों का कारबाह करती है।

7. (i) “व्याज” से भारत में लिए गए उधार और अग्रिमों पर व्याज अभित है और इसके अंतर्गत है—

(क) भारत में उपयोग के लिए मंगूर किए गए किसी प्रत्यय के अनुपयोजित भाग पर प्रतिवृद्धता प्रभाव, और

(ख) भारत में लिए गए वस्तुपत्र और विनियम पक्ष पर बद्दा। किन्तु इसके अंतर्गत नहीं है—

(i) भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 (1934 का 2) की धारा 42 का उपधारा (1वा) में विनिर्दिष्ट व्याज,

(ii) राज हुडियों पर बद्दा।

(ii) व्याज कर अधिनियम के उपबन्धों के अधीन रहते हुए, किसी पूर्व वर्ष में फिरी प्रत्यय संस्था का प्रभाव व्याज (अन्य प्रत्यय संस्थाओं को या किसी ऐसी सरकारी सोसायटी को, जो बैंककारी का कारबाह करने में लगी हुई है विए गए उधारों और अग्रिमों पर व्याज में भिन्न) व्याज की वह युक्त रकम होती जो उस पूर्व वर्ष में उस प्रत्यय संस्था को प्रोद्भूत या उद्भूत होती है।

परन्तु शायांकर अधिनियम की धारा 43 ध में निर्दिष्ट डूबने या शंकास्पद अर्थों के प्रवर्णों के संबंध में कोई व्याज, प्रत्यय संस्था को उस पूर्व वर्ष में जिसमें वह प्रत्यय संस्था द्वारा उस वर्ष के लाभ और द्वानि लेखा में जमा किया जाता है या यथास्थिति, जिसमें वह प्रत्यय संस्था द्वारा वास्तव में प्राप्त किया जाता है, इसमें से जो भी पूर्व वर्ष के बोर्ड उद्भूत अर्थ हो गई है।

(iii) पूर्व वर्ष के लिए प्रभाव व्याज की संगणना करने में उस पूर्व वर्ष में निर्धारिती को प्रोद्भूत या उद्भूत होने वाले (प्रत्यय संस्थाओं को लिए गए उधारों और अग्रिमों पर व्याज से भिन्न) व्याज की कुल रकम ऐसे व्याज की उस रकम की कटोती अनुकात की जाएगी जिसके बारे में वह साबित कर दिया गया है कि वह पूर्व वर्ष के बोर्ड डूबन अर्थ हो गई है।

परन्तु यह तब जब कि ऐसा व्याज किसी पूर्ववर्ती पूर्व वर्ष के लिए निर्धारित के प्रभाव व्याज के संगणना करने में हिसाब में लिया गया है और उस रकम को उस पूर्व वर्ष के लिए जिसके बोर्ड उसका डूबन अर्थ होना साक्षित किया गया है निर्धारिती के लेखाओं में अवस्था नाय रकम के रूप में लिया गया है।

(ख) प्रसूत सं. 7 के टिप्पण के पैरा 3 में—

(1) अंक “50” के स्थान पर अंक “51” और

(2) अंक “41” के स्थान पर पद “4क” दबे जाएंगे।

[सं. 9371/का.सं. 153/10/93-टी.पी.एन.]

टी.पी. सेमवाल, अवार सचिव

पाद टिप्पण—व्याज कर नियम, 1974 जो तत्पश्चात समय-समय पर संशोधित किय गए और अन्त में का.आ.सं. 652 (ज) तारीख 31-8-1992 द्वारा मधिसूचित किय गए थे।

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

Central Board of Direct Taxes

NOTIFICATION

New Delhi, the 15th September, 1993

INTEREST-TAX

S.O. 685 E.—In exercise of the powers conferred by section 27 of the Interest-tax Act, 1974 (45 of 1974), the Central Board of Direct Taxes hereby makes the following rules further to amend the Interest-tax Rules, 1975, namely:—

1. (1) These rules may be called the Interest-tax (Amendment) Rules, 1993.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Interest-tax Rules, 1974, in the Appendix,—

(a) for the existing Form No. 1, the following form shall be substituted, namely:—

Form No. 1

INTEREST-TAX

RETURN OF CHARGEABLE INTEREST

See Section 7 of the Interest-tax Act, 1974 and Rule 3 of the Interest-tax Rules, 1974

For use in
Income-tax Office

Name and office address in block letters

Permanent Account Number
Ward/Circle/Special Range where assessed/assessable

Telephone

Assessment Year

Whether this is a revised return. If so, state the receipt no. and date of previous return.

State whether resident or non-resident

PART-I STATEMENT OF CHARGEABLE INTEREST

Rs.

1. Interest on loans and advances made in India [See Sl. No. 7(i) and (ii) of Notes]
2. Less : Interest which is established to have become bad debt [See Sl. No. 7(iii) of Notes]
3. Chargeable Interest (1-2)
4. Chargeable Interest as rounded off to the nearest multiple of ten rupees Section 288A of the Income-tax Act as applied to section 21 of the Interest-tax Act)

PART-II STATEMENT OF INTEREST-TAX:

1. Tax on chargeable interest
2. Add :
 - (a) Interest for late filing of return (Section 12)
 - (b) Interest for default in payment of advance tax (Section 12A)
 - (c) Interest for deferment of advance tax payment (Section 12B)
3. Total tax and interest payable (1+2)
4. Advance tax paid:

Amount (Rs.)	Ist Instalment	2nd Instalment	3rd Instalment	Total
--------------	----------------	----------------	----------------	-------

Date				
------	--	--	--	--

5. Tax on self-assessment :

Date of payment	Interest-tax (Rs.)	Interest out of Sl. No. 2 above (Rs.)	Total (Rs.)
-----------------	--------------------	---------------------------------------	-------------

6. Total tax and interest paid (4+5) Rs.....

7. Tax/Interest payable or refundable (3-6) Rs.....

PART-III OTHER SUMS NOT INCLUDED IN CHARGEABLE INTEREST AND CLAIMED TO BE NOT TAXABLE

Particulars	Amount (Rs.)	Reason why not taxable

VERIFICATION

I _____ son/daughter /wife of _____
(name in full and block letters)
being the _____ of _____

(designation) (name of the credit institution)
solemnly declare that to the best of my knowledge and belief
the information given in this return and the statement accompanying it are correct and complete and that the amount of
chargeable interest and other particulars shown therein are
truly stated and relate to the previous year relevant to the
assessment year commencing on the 1st day of April, 19 _____.
I further solemnly declare that during the said previous year
no other chargeable interest accrued or arose to or was received by the credit institution.

I further declare that in my capacity as _____ I am
(designation)

competent to make this return and verify it on behalf of the
credit institution.

Date _____ Signature _____

Place: _____

Notes :

1. This return should be signed by the principal officer of the credit institution or where the case of a non-resident credit institution any person has been treated as its agent under section 163 of the Income-tax Act, 1961 by such person.

2. Before signing the verification the signatory should satisfy himself that this Return and the accompanying statements are correct and complete in all respects. (Any person making a false statement in this return or the accompanying statements shall be liable to prosecution under section 24 of the Interest-tax Act, 1974, and on conviction be punishable with rigorous imprisonment for a term which shall not be less than three months but which may extend to seven years and with fine).

3. Delete inappropriate words.

4. If the interest-tax payable on the basis of this return exceeds the amount of interest-tax paid in advance, such excess interest-tax together with interest payable under any provision of this Act must be paid before furnishing of the return and the return shall be accompanied by proof of payment of such interest-tax and interest [Section 9(1)].

5. Attach a copy of the audited accounts along with a
of the auditors report.

6. "Credit institution" means,—

- (i) a banking company to which the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) applies (including any bank or banking institution referred to in section 51 of that Act);
- (ii) a public financial institution as defined in section 4A of the Companies Act, 1956 (1 of 1956);
- (iii) a State financial corporation established under section 3 or section 3A or an institution notified under section 46 of the State Financial Corporations Act, 1951 (63 of 1951); and
- (iv) any other financial company:

"Financial Company" means a company, other than a company referred to in sub-clause (i), (ii) or (iii) of clause (5A), being—

- (i) a hire-purchase finance company, that is to say, a company which carries on, as its principal business, hire purchase transactions or the financing of such transactions;
- (ii) an investment company, that is to say, a company which carries on, as its principal business, the acquisition of shares, stock, bonds, debentures, debenture stock, or securities issued by the Government or a local authority, or other marketable securities of a like nature;
- (iii) a housing finance company, that is to say, a company which carries on, as its principal business the business of financing of acquisition or construction of houses, including acquisition or development of land in connection therewith;
- (iv) a loan company, that is to say, a company not being a company referred to in sub-clauses (i) to (iii) which carries on, as its principal business, the business of providing finance, whether by making loans or advances or otherwise;
- (v) a mutual benefit finance company, that is to say, a company which carries on, as its principal business, the business of acceptance of deposits from its members and which is declared by the Central Government under section 620A of the Companies Act, 1956 (1 of 1956), to be a Nidhi or Mutual Benefit Society;
- (vi) a residuary non-banking company (other than a financial company referred to in sub-clause (i), (ii), (iii), (iv) or (v)), that is to say, a company which receives any deposit under any scheme or arrangement, by whatever name called, in one lump sum or in instalments by way of contributions or subscriptions or by sale of units or certificates or other instruments or in any other manner; or

(vii) a miscellaneous finance company, that is to say a company which carries on exclusively, or almost exclusively, two or more classes of business referred to in the preceding sub-clauses.

7. (i) "Interest" means interest on loans and advances made in India and include:—

- (a) commitment charges on unutilised portion of any credit sanctioned for being availed of in India; and
- (b) discount on promissory notes and bills of exchange drawn or made in India, but does not include—
 - (i) interest referred to in sub-section (1B) of section 42 of the Reserve Bank of India Act, 1934 (2 of 1934);
 - (II) discount on treasury bills.

(ii) Subject to the provisions of the Interest-Tax Act, the chargeable interest of any previous year of a credit institution shall be the total amount of interest (other than interest on loans and advances made to other credit institutions or to any cooperative society engaged in carrying on the business of banking) accruing or arising to the credit institution in that previous year:

Provided that any interest in relation to categories of bad or doubtful debts referred to in section 43D of the Income-tax Act shall be deemed to accrue or arise to the credit institution in the previous year in which it is credited by the credit institution to its profit and loss account for that year or, as the case may be, in which it is actually received by the credit institution whichever is earlier.

(iii) In computing the chargeable interest of the previous year, there shall be allowed from the total amount of interest (other than interest on loans and advances made to credit institutions accruing or arising to the assessee in the previous year, a deduction in respect of the amount of interest which is established to have become a bad debt during the previous year:

Provided that such interest has been taken into account in computing the chargeable interest of the assessee of an earlier previous year and the amount has been written off as irrecoverable in the accounts of the assessee for the previous year during which it is established to have become a bad debt.

(b) In Form No. 7, in the Notes, in Paragraph 3,—

(1) for the figure "50" the figure "51" and

(2) for the figure "41" the expression "4A"

shall be substituted.

[No. 9371/F. No. 153/10/93-TPL]
D.P. SEMWAL, Under Secy.

Foot Note : Interest-Tax Rules, 1974, which were subsequently amended from time to time, were last notified vide S.O. No. 652 (E) dated 31-8-1992.

